(भीतरी पाट से)

गालो लोककथा की प्रासंगिकता

गोरिक अतअ

अरुणाचल प्रदेश पूर्वोत्तर का सबसे बड़ा भूभाग वाला भारतीय संघ राज्य है। यह भारत के मानचित्र पर अंतरराष्ट्रीय सीमा से जुड़ा है। "अरुण किरण शीश भूषण कठं हिम की धारा, प्रभात सूरज चुंबित देश अरुणाचल हमारा" बहुमुखी प्रतिभा संपन्न स्वर्गीय भूपेन हजारिका का यह गीत अरुणाचल प्रदेश के परिचय के लिए पर्याप्त है। इस प्रदेश को प्रातःकाल भगवान भास्कर अपनी स्वर्ण किरणों से आलिंगन कर आशीष देते हैं। अरुणाचल प्रदेश जनजातीय प्रदेश है। इसमें कुल 26 जनजातीय समुदाय निवास करते हैं, जिनकी अपनी उपजनजातियों की संख्या गिना जाए तो 100 से भी अधिक हैं। इन आदिवासी समुदायों के रीति रिवाज, संस्कृति, परंपरा, भाषा, उत्सव में पर्याप्त भिन्नता है। इस प्रदेश में लगभग 50 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। इन जनजातियों का लोक-साहित्य वाचिक परंपरा में समृद्ध रूप से सुरक्षित है। इस राज्य की प्रमुख जनजतियाँ हैं-आदी, न्यीशी, गालो, मोनपा, वाँचो, खामटि, नोक्टे आदि।

अरुणाचल प्रदेश के विभिन्न जनजातियों में से गालो एक ऐसी जनजाति है जो 'वंशावली' परंपरा को दृढ़ रूप से अपनाए हुए है और इससे वे अपने पूरे वंश की जानकारी रखते हैं। गालो आबोतानी को अपना पूर्वज मानते हैं। गालो मुख्य रूप से पूर्वी सियांग, लपारादा, लोअर सियांग, ऊपरी सुबनसिरी, नामसाई आदि जिलों में बसे हुए हैं। वे इन जिलों के 'दोलू' यानी गांव में खेती पर निर्भर होकर, जीवन यापन करते है। अब बदलते जमाने के साथ पढ़ाई-लिखाई कर नौकरी करने के साथ-साथ खेती भी करने लगे हैं। आश्चर्य की बात यह है कि उनका अपना लिखित नीति-नियम के न होते हुए भी वे गांव में व्यवस्थित रहते हैं। अपने पूर्वजों के सिखाए नीति-नियम को वर्तमान युग में भी अपनाए हुए हैं। गालो समाज सांस्कृतिक रूप से संपन्न एवं समृद्ध समाज है और उनकी संस्कृति और परंपरा का स्रोत उनका मौखिक लोक साहित्य है। गालो जनजाति का लोक साहित्य समृद्ध है। लोक साहित्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता उनकी वाचिकता है। वर्तमान में इनको लिपिबद्ध किया जा रहा है। गालो जनजाति के हर्ष-विलास, दु:ख-सुख, रीति-रिवाज, नीति-नियम, परंपरा, संस्कृति आदि पूर्णतया लोक साहित्य में समाहित है।

आधुनिक वैज्ञानिक सभ्यता की जीवन पद्धति जटिल, मानसिक कष्टों, ज्ञानजन्य अहंकारों, अतिवादी पांडित्य तथा वर्ग-संघर्ष की कहानियों से भरी हुई है। यह एक ऐसी सृष्टि है जिसकी सत्ता पोथियों के ज्ञान पर टिका हुआ नहीं है। इस दुनिया के लोग गीतों के लय और ताल पर झूमते हैं, कथाओं और गाथाओं के प्रभाव में बिना रूके आगे बढ़ते जाते हैं और स्वस्थ समाज की कामना करते हैं। पहेलियों और लोकोक्तियों में सृजित राह को अपनाते हुए वे अपनी वाग्मिता और प्रज्ञा से आधुनिक ज्ञान और दृष्टिकोण तक को चुनौती देते हैं। यह संस्कृति लोक देवी-देवताओं के चरणों में विभिन्न विश्वासों, भावनाओं, अनुष्ठानों, शकुन-अपशकुनों, तीज-त्योहारों इत्यादि माध्यम से ग्रहणीय बनी हुई है। यह समाज अपने सामान्य जीवन को हंसते-गाते, नाचते-झूमते,

रीझते-खीझते, खेलते-मिलते पूरा करता आया है। जंगल में खिलने वाले फूलों की तरह ये 'सृष्टि' उनके लिए सुंदर, स्वाभाविक और सहज है। यह लोक सच्चे अर्थों में जनमानस में लोकप्रिय है। यह अधूरा सत्य है कि आदिवासी लोग जिस लोककथा को मानते हैं वह उनके अशिक्षित, अर्धशिक्षित, सभ्य, अर्धसभ्य इत्यादि कहलाने का पर्याय है।

लोक साहित्य मौखिक अभिव्यक्ति है। लोक साहित्य में मानव जीवन के सभी पहलुओं का सजीव चित्रण होता है, जिसमें मानव जीवन की आशा-आकांक्षा, हर्ष-वेदना, जय-पराजय सुख-दुख आदि सम्मिलित होते हैं। मानव जाति की इन विशेषताओं को अभिव्यक्त करने का माध्यम ही लोक साहित्य है। लोक साहित्य की प्रमुख विधा है- लोकगीत, लोक कथा, लोक नृत्य, लोकनाट्य, लोकोक्ति एवं मुहावरे आदि। लोककथा शिक्षित एवं अशिक्षित दोनों ही प्रकार के समुदाय की परंपरागत मौखिक संपत्ति है। लोक कथा एक मौखिक अभिव्यक्ति है। लोक कथाओं के माध्यम से जनता अपने समाज की मान्यताओं, विश्वास एवं भावनाओं आदि को प्रकट करती है। अतः लोक कथाओं में समाज की मान्यताएं, विश्वास परंपरा आदि परिलक्षित होते हैं लोक कथाओं में जीवन के सभी पहलुओं का सजीव चित्रण होता है। लोककथा अपनी सरलता और सहजता के कारण जनमानस में लोकप्रिय है। लोककथा को अपनी वसीयत के रूप में अपनाते हुए आज भी दादी मां अपने गोद में पोते-पोतियों को बिठा कर लोककथा सुनाती है, माएं अपने बच्चों को सुलाते वक्त लोककथा कहती हैं। इस प्रकार लोक कथाएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी से तीसरी पीढ़ी हस्तांतरण होती आगे बढती हैं।

गालो लोग गांव में निवास करते हैं। गालो समाज के गांव में अधिकतर एक ही गोत्र के लोग निवास करते हैं और किसी-किसी गांव में भिन्न गोत्र के लोग निवास करते हैं। एक ही गोत्र के हों या भिन्न गोत्र के, सबकी जीवन शैली एक समान है, उनमें भिन्नता दिखाई नहीं देती। गालो जनजाति प्राचीन काल से चली आ रही परंपरा को अंगीकार किए हुए है। गालो लोक कथा- तपो और याकि और दियी तामी रोसी तामी के माध्यम से हम इनकी संस्कृति एवं सभ्यता को आसानी से समझ सकते हैं।

तपो और याकि

इस लोककथा में आबोतानी तपो (सूअर) और याकि (कुत्ता) दोनों को अपने घर का सदस्य बनाकर साथ रखता था। एक दिन आबोतानी घर में जगह की कमी महसूस करता है। वह दोनों में से एक को घर के ऊपर अपने साथ और दूसरे को घर के नीचे रखने का निर्णय लेता है। आबोतानी दोनों की परीक्षा लेने के लिए है, खेत जोतने का कार्य सौंपता है। स्वयं हिरण का शिकार करने जंगल की ओर निकल पड़ता है। तपो जब भी काम करता है मन लगाकर कार्य को पूरा करता। याकि उसका विपरीत था। आज भी तपो तपती धूप में पसीने से तर-बतर होकर खेत जोत रहे था, याकि आराम से नाकुम में सो रहा था। अपना ही परिवार समझ कर तपो अकेले ही खेत जोतता है। शाम हो गई तानी का लौटने का समय था, याकि को तानी की परछाई नज़र आती है। तुरंत उठकर थका हारा तपो को हाथ मुंह धोकर आराम करने की सलाह देता है। नादान तपो को याकि की मंशा से अनजान हाथ मुंह धोने चला गया, तभी याकि अपनी चाल चलता है। तपो द्वारा जोते गए खेत को अपने पैरों के

निशान से भर देता है, तानी उन पैरों के निशान को देखकर ही निर्णय लेता है कि उसके साथ घर में याकि रहेगा और नीचे तपो।

इस लोककथा में तपो वर्तमान युग के उसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो अपने आपको समाज का हितरक्षक है, मगर उसे मेहनत का फल नहीं मिलता और याकि समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो कामचोर है, आलस्य से घिरा है, मगर स्वार्थी और मौकापरस्त बहुत है। याकि उन लोगों में से हैं जो मेहनत किए बिना फल की आशा करता है। फल की लालसा में ऐसे लोग अपने और पराए का ख़याल नहीं रखते। वे कहीं भी किसी भी मोड़ पर धोखा दे देने से बाज नहीं आते। आज के जमाने में ऐसे अनेक लोग हैं जो अपनी चाल से दूसरे के हक को मार लेते हैं, किंतु उन्हें कोई पछतावा नहीं होता है। जैसे तपो को याकि ने धोखा दिया।

याकि के पैरों के निशान दिख गया तो उसको उसका फल मिल गया और तपो मेहनत करके भी निष्फल साबित हुआ। कहानी में तपो के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि आपको मेहनत करने के साथ-साथ उसे उचित समय पर दिखाना और साबित करना भी होगा। तपो के जैसा चुप नहीं बैठना चाहिए, बल्कि अपने हक के लिए आवाज उठाना भी आना चाहिए। उस वक्त तपो आबोतानी को सच्चाई बता देता तो आज याकि की जगह तपो होता।

दियी तामी रोसी तामी

आबोतानी और दियी तामी की शादी के बाद उसकी माँ आने मोपिन अपनी बेटी को अलौकिक शक्ति प्रदान करती है। उस अलौकिक शक्ति से नवविवाहित यह जोड़ी खुशीपूर्वक अपना जीवनयापन करते हैं। उस अलौकिक शक्ति में ऐसा गुण था कि दियी तामी एक ही अनाज के दाने से बर्तन भर भोजन पका लेती थी। कुछ समय पश्चात तानी का दिल एक गरीब की बेटी रोसी तामी पर आ गया और वह उसे ब्याह कर घर ले आया। दियी तामी अपने ऊपर हो रहे इस अन्याय का विरोध करती है। उसे किसी भी हाल में सौतन स्वीकार नहीं थी। इसीलिए तानी को छोड़ वह अपने मायके लौट जाती है। अब घर-परिवार की जिम्मेदारी रोसी तामी के ऊपर आ जाती है। मगर रोसी तामी को घर संभालने नहीं आ रहा था। वह एक अनाज के दाने की जगह दो दाने डालकर भोजन पकाती है, जिससे आबोतानी गरीब हो जाता है। आबोतानी को अपनी पहली धर्मपत्नी दियी तामी की कमी महसूस होती है। इसीलिए वह उससे माफी मांगकर उसे इज्जत के साथ घर वापस ले आता है और रोसी तामी को त्याग देता है।

आने मोपिन को अपनी दियी तामी बेटी प्रदान करने का आशय यह है कि आज के युग में माँ-बाप अपनी बेटी को किसी भी परिस्थिति का सामना करने में सक्षम बनाते हैं- चाहे उसे शिक्षित करना हो या अन्य कला में प्रवीण बनाना। आने मोपिन अपनी बेटी को परिवार का भरण-पोषण करने की शक्ति देती है। इस कथा में दियी तामी आधुनिक युग के उन औरतों की प्रतिमूर्ति है जो अपने हक के लिए खड़ी होती है और किसी से दबकर नहीं रहती अर्थात् अपने साथ हो रहे अन्याय का हिम्मत से विरोध करती है। दियी तामी उस स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने घर में अपनी मौजूदगी दर्ज करती है और जिसके न होने पर घर बेघर हो जाता है। दियी तामी घर को सँभालने में प्रवीण थी। इसलिए आबोतानी उसके महत्त्व को भली-भांति समझ लेते हैं और उसे वापिस लिवा लाते हैं।

साहित्य सभी के कल्याण और हित का आग्रही होता है तथा इसमें हर युग का अक्स नज़र आता है। गालो समाज ग्रामीण जीवन जीते हुए भी हर युग के साथ अग्रसर है। बदलते युग के साथ-साथ समाज की जीवन शैली भी बदलती जाती हैं। मगर लोक साहित्य नहीं बदलता, इसमें हर युग को ग्रहण करने की क्षमता होती है। तपो और याकि एवं दियी तामी और रोसी तामी गालो लोककथा में आधुनिकता का अक्स दिखता है।

संदर्भ ग्रंथ :

डूसो, गुम्पी. (2021). *यापोम: गालो लोक कथाएँ*. नई दिल्ली: अनुज्ञा बुक्स.

लिली, तुम्बम रीबा. (2020). *कातम: अरुणाचल प्रदेश की जनजातियों की लोककथाएँ*. नई दिल्ली: अनुज्ञा बुक्स.

साक्षात्कार

न्युमतो न्योराक, ञोराक ग्राम, पूर्वी जिला आलो, अरुणाचल प्रदेश

मेमा चेरी, सहायक प्रोफेसर, शासकीय महाविद्यालय, देरा नातुङ, अरुणाचल प्रदेश

*(**लेखकीय परिचय** : गोरिक अतअ राजकीय महाविद्यालय दोईमुख, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। मोबा: 7005881308, ई-मेल : gorikgcs@gmail.com)*